92 तरबीयते औलाद

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सब तअरीफ़े अल्लाह तआला के लिए हैं। जो सारे जहान का पालन हार है। हम उसी से मदद व माफ़ी चाहते हैं। अल्लाह की लातादाद सलामती, रहमतें व बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल. पर, आपकी आल व औलाद और असहाब रज़ि. पर।

व बअद!

अहमियत व ज़रूरत

औलाद मां–बाप के पास अमानत होती है। उसकी तरबीयत उनकी बुनियादी ज़िम्मेदारी है। इसलिए कि बच्चे मां–बाप की रिआया होते हैं। औलाद की ख़ैर ख़्वाही करना, उनकी बेहतर इस्लाह और तरबीयत करना उन पर वाजिब है। औलाद के लिए सिर्फ़ रोटी, कपड़े व मकान का इन्तेज़ाम करना ही उनकी ज़िम्मेदारी नहीं है बल्कि इसके साथ–साथ उनकी दीनी व अख़लाक़ी तरबीयत करना भी उनका फ़रीज़ा है।

इर्शादे बारी तआला है "ऐ ईमान वालों! तुम अपने आप को और अपने घर वालों को उस आग से बचाओं जिसका ईंधन इन्सान व पत्थर हैं।" **(तहरीम–आयत–6)**

और अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया "तुममें से हर शख़्स ज़िम्मेदार है और हर शख़्स से उसकी ज़िम्मेदारी के बारे में पूछा जाएगा। लिहाज़ा हाकिमें वक़्त ज़िम्मेदार है और उससे उसकी ज़िम्मेदारी के बारे में सवाल किया जाएगा। हर शख़्स अपने घर वालों का ज़िम्मेदार हैं, उससे उसके घर वालों के बारे में पूछा जाएगा। औरत शौहर के घर में जिम्मेदार है, उससे भी उसकी ज़िम्मेदारियों के बारे में सवाल होगा। इस तरह तुम में से हर शख़्स ज़िम्मेदार है और हर शख़्स अपनी ज़िम्मेदारी के बारे में जवाब देह है।"

(बुख़ारी–893 – मुस्लिम–4724)

और यह कि "जिस शख़्स को अल्लाह ने ज़िम्मेदार और निगरान बनाया है फिर वह आख़िरी दम तक अपने मातहतों के साथ धोखा करता रहता है तो अल्लाह तआला उस पर जन्नत को हराम कर देता है।" **(बुख़ारी–7150 – मुस्लिम–4729)**

दुनियावी मामलात में तो अक्सर वाल्दैन अपनी औलाद का ख़्याल रखते ही हैं, मगर दीनी व उख़ र वी मामलों में भी उनकी ख़ैर ख़्वाही करना चाहिये। क्योंकि "जब इन्सान मर जाता है तो उसका अमल ख़त्म हो जाता है। सिवाए तीन चीज़ों के (1) सदक़ा जारिया (2) नफ़ा पहुंचाने वाला इल्म और, (3) नेक औलाद जो उसके लिए दुआ करती हैं।" **(अबुदाऊद–2880 – नसाई–3684)**

यूं तो "हर बच्चा फ़ितरत (इस्लाम) पर पैदा होता है। उसके बाद उसके मां–बाप चाहें तो उसे यहूदी बनादें, चाहें तो ईसाई बना दें और चाहें तो आग का पुजारी (मजूसी) बना दें।"

(बुख़ारी–1359 – मुस्लिम–6758)

ध्यान रहें नेकी की राह की तरफ़ अपनी औलाद की रहनुमाई करने, उन्हें नेक व सालेह बनाने की कोशिश करने पर ही अपनी मौत के बाद उनसे फ़ायदा हासिल करने की उम्मीद की जा सकती है, इसलिए यह कोशिश ज़रूर करना चाहिये।

इस बारे में हज़रत लुक़मान ने जो नसीहतें अपने बेटे को की थीं, उनसे मदद ली जा सकती है।

हज़रत लुक़मान की अपने बेटे को नसीहतें:–

(1) "मेरे प्यारे बेटे! अल्लाह के साथ शिर्क न करना। बेशक शिर्क बहुत बड़ा गुनाह है।" **(लुक़मान–आयत–13)**

हमें चाहिये कि हम भी अपनी औलाद की तरबीयत में सबसे ज़्यादा अक़ीदे की दुरूस्तगी पर ध्यान दें। तौहीद का इल्म दें और शिर्क से और शिर्क की मौजूदा तमाम शक्लों से डराएं, ताकि वोह शिर्क से बच सकें। औलाद को बताएं कि पूरी कायनात का पैदा करने वाला, उसका मालिक, रिज़्क़ देने वाला, नफ़ा व नुक़सान पहुंचाने वाला, ज़रूरतों को पूरा करने वाला, दाता और मुश्किल कुशा सिर्फ़ अल्लाह ही है। इसलिए मुसीबत में उसी को पुकारें, उसी से दुआ मांगें, उसी से सारी उम्मीदें लगाएं, दिल में सिर्फ़ उसी का डर रखें और किसी वफ़ात पा चुके शख़्स (बुज़ुर्ग) से न कुछ मांगें, न उसे पुकारें, न उससे डरें बल्कि सिर्फ़ अल्लाह ही पर भरोसा करें।

(2) अल्लाह का और मां–बाप का शुक्र गुज़ार बनना।

(3) वाल्दैन के साथ अच्छा बर्ताव करना।

(4) मां–बाप अगर शिर्क करने को कहें तो उनका कहा न मानना।

(5) उसकी राह चलना जो अल्लाह की तरफ़ झुका हुआ हो।

जैसा कि इर्शादे बारी है "हमने इन्सान को उसके मां–बाप के बारे में नसीहत की है। उसकी मां ने दुख पर दुख उठा कर उसे कोख में रखा और उसकी दूध छुड़ाई दो साल है। तू मेरी और अपने मां–बाप का शुक्र गुज़ार बन। (तुम सब को) मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है। अगर वह दोनों तुझ पर इस बात का दबाव डालें कि तू मेरे साथ शिर्क करे तो उनका कहा मत मानना। हां दुनियां में उनके साथ अच्छा सुलूक करना और उसके रास्ते पर चलना जो मेरी तरफ़ झुका हुआ हो। तुम सब को मेरी ही तरफ़ लौटना है।" **(लुक़मान–आयत–14–15)** अल्लाह ने इन दो आयतों में वाल्दैन के साथ बेहतर सुलूक करने की नसीहत के साथ यह भी बताया कि अगर वोह शिर्क करने के लिए कहें तो उनकी बात न मानना। क्योंकि "अल्लाह की ना फ़रमानी में किसी की इताअत नहीं। इताअत तो सिर्फ़ नेकी में है।" **(अहमद / बुख़ारी–5205 हाकिम)**

आगे हज़रत लुक़मान ने बेटे को यह नसीहत की

(6) "प्यारे बेटे! अगर कोई चीज़ राई के दाने के बराबर हो। फिर वह चाहे किसी चट्टान में हो या आस्मानों में या ज़मीन में हो, अल्लाह उसे ज़रूर लाएगा।" **(लुक़मान–आयत–16)**

मतलब यह कि अल्लाह तआला हर छोटी–बड़ी नेकी और बुराई व अच्छाई को खूब जानता है। लिहाज़ा औलाद को नेकियों की तरफ़ उभारें और बुराईयों से डराएं।

(7) ऐ मेरे प्यारे बेटे! तू नमाज़ क़ायम रखना। अच्छे कामों का हुक्म देते रहना, बुरे कामों से मना करना और जो मुसीबत तुझ पर आए उस पर सब्र करना।" **(लुक़मान–आयत–16)**

हमें भी चाहिये कि औलाद को नमाज़ पढ़ने का पाबन्द बनाएं उन्हें पाकी, वुज़ू और नमाज़ का नबवी तरीक़ा सिखलाएं।

हम खुद भी नमाज़ों की पाबन्दी करें। रसूल सल्ल. ने फ़रमाया "तुम्हारे बच्चे जब सात साल के हो जाएं तो उन्हें नमाज़ पढ़ने का हुक्म दो और जब दस साल के हो जाएं (और नमाज़ न पढ़ें) तो उन्हें मारो।" **(अबु दाऊद–494 – इब्ने खुज़ैमा –1002 – सही अल जामेअ–5868)**

(8) ज़मीन पर इतरा कर न चलना। क्योंकि अल्लाह घमन्ड और तकब्बुर करने

वाले शख़्स को पसन्द नहीं करता। इसलिए दर्मियानी चाल से चलना।
(10) आवाज़ को धीमी रखना। क्योंकि आवाज़ो में सबसे बुरी आवाज़ गधो की है।" (लुक़मान–आयत–18–19)

तरबीयते रसूल सल्ल.

अल्लाह के रसूल सल्ल. ने अपने चचाज़ाद भाई अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि को यह नसीहतें की थी। हमें चाहियें कि हम भी अपनी औलाद की तरबीयत इन के ज़रिये करें।

(1) तुम अल्लाह (के दीन) की हिफ़ाज़त करना, अल्लाह तुम्हारी हिफ़ाज़त करेगा।
(2) अल्लाह की हुदूद से आगे न बढ़ना, अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा।
(3) जब भी मांगना चाहों, अल्लाह से मांगना।
(4) जब भी मदद चाहो सिर्फ़ अल्लाह से मदद चाहना।
(5) इस बात पर यक़ीन रखना कि सब लोग मिलकर तुम्हें फ़ायेदा पहुंचाना चाहें तो वह तुम्हें उतना ही नफ़ा पहुंचा सकते हैं जितना अल्लाह ने तुम्हारी क़िस्मत में लिख रखा है। अगर सब लोग मिल कर तुम्हें नुक़्सान पहुंचाना चाहें तो वोह ऐसा नहीं कर सकते। हां अल्लाह ने जो तेरा नुक़्सान लिख रखा है, वह होकर रहेगा।
(6) तक़दीरें लिखी जा चुकी हैं।
(7) खुशहाली के दिनों में अल्लाह के और उसके बन्दों के हुकूक़ अदा करना, मुश्किल वक़्त में अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा।
(8) अल्लाह तआला जो चीज़ तुझसे रोक ले। वह तुझे हरगिज़ नहीं मिल सकती और अल्लाह जो चीज़ तुझे देना चाहे, उसे तुझसे कोई रोक नहीं सकता।
(9) मदद सब्र के साथ आती है और हर परेशानी के बाद यक़ीनन खुशहाली है।
(10) हर तंगी आसानी और आसूदगी को लाती है।

(अहमद–2804 – तिर्मिज़ी–2516–सही)

कुछ ज़रूरी बातें:–

औलाद की तरबीयत के लिए यह कुछ बातें बेहद ज़रूरी हैं। उन्हें बचपन ही से इस्लाम और अरकाने इस्लाम, इसी तरह ईमान और अरकाने ईमान के बारे में बताया–सिखाया जाए।

इस्लाम

औलाद को सिखाया जाए कि "इस्लाम" अल्लाह तआला को एक मानने, उसकी फ़रमाबरदारी करते हुए और शिर्क का इन्कार कर के अपने आपको अल्लाह के अहकाम के आगे झुका देने का नाम है।

औलाद को यही भी बतलाएं कि 'इस्लाम' की बुनियाद इन पांच चीज़ो पर है।

(1) इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवाए कोई इबादत के लायक़ नहीं है और मुहम्मद सल्ललाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के बन्दें व रसूल हैं।
(2) नमाज़ क़ायम करना
(3) ज़कात देना
(4) रमज़ान के रोज़े रखना
(5) अल्लाह के घर का हज करना।

(बुख़ारी–8 – इब्ने माजा–64 – मुस्लिम–111)

इर्शादे बारी तआला है "अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दो और खुद भी उसे पाबन्दी से अदा करते रहो।" (ताहा–आयत–132)

"नमाज़ कायम करो और ज़कात दो" (बक़राह...)

ऐ ईमान वालों! तुम पर रोज़े रखना फ़र्ज़ किया गया है जैसा कि तुमसे पहले के लोगों पर फ़र्ज़ किया गया था।"

(बक़राह–आयत–183)

"अल्लाह ने उन लोगों पर इस घर (बैतुल्लाह) का हज फ़र्ज कर दिया है जो इस तक जाने की इस्तेताअत रखते हों।"

(आले इमरान–आयत–97)

ईमान:–

औलाद को यह सिखलाएं कि 'ईमान' दिल से यकीन, ज़बान के इकरार और जिस्म के अअज़ा (अंगों) के अमल का नाम है। नबी सल्ल. का इर्शाद है "ईमान यह है कि तू अल्लाह पर, उसके फ़रिश्तों पर, उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर, क़यामत के दिन पर और इस बात पर कि अच्छी या बुरी तक़दीर अल्लाह की तरफ़ से होती है, ईमान लाए।"

(मुस्लिम–97–बुखारी 4777)

(1) 'अल्लाह' पर ईमान लाने का मतलब अल्लाह के वजूद को मानना और इस बात पर पक्का यक़ीन रखना है कि अल्लाह ही हमारा पालनहार, मालिक और पैदा करने वाला है और सिर्फ़ वही सारी इबादतों का अकेला हक़दार है। "अल्लाह ही बरहक़ है और उसके सिवा जितने मअबूदों को लोग पुकारते हैं, वो सब बातिल (झूट) हैं।" (लुक़मान–आयत–30)

(2) 'फ़रिश्तों' पर ईमान लाने का मतलब उनके वजूद को मानना और इस बात का यक़ीन रखना है कि वह अल्लाह की नूरानी व ग़ैबी मख़लूक़ हैं। जो दिन–रात अल्लाह की इबादत करने और उसके अहकाम को बजा लाने में मशग़ूल रहते हैं। "आस्मानों व ज़मीन में जो कुछ है, सब अल्लाह का है और जो (फ़रिश्ते) उसके पास हैं, वो उसकी इबादत से न तो सरकशी करते हैं और न थकते हैं। वो दिन–रात अल्लाह की तअरीफ़ व पाकी बयान करते रहते हैं और ज़रा सी भी सुस्ती नहीं करते।" (अम्बिया–आयत–19–20)

(3) 'किताबों' पर ईमान लाना यह है कि जिन किताबों को अल्लाह ने आस्मान से अपने रसूलों पर उतारा उन्हें माना जाए म ह्हूर आस्मानी किताबें यह चार हैं।

(1) तौरेत (2) ज़बूर (3) इन्जील (4) कुरआन

अमल कुरआन के अहकाम पर किया जाए।

(4) 'रसूलों' पर ईमान लाने का मआनी यह है कि जिन शख़्सियात को अल्लाह ने लोगों की हिदायत के लिए चुना और उन पर वहयी नाज़िल करके दीने इस्लाम की तब्लीग़ का हुक्म दिया वो सब अल्लाह के बन्दे और इन्सान थे। मुहम्मद सल्ल. की शरीअत पर अमल किया जाए। जिन्हें क़यामत तक के लिए दुनिया भर के जिन्न और इन्सानों का रसूल बना कर भेजा गया।

इर्शादे बारी है "ऐ नबी सल्ल.! आपके रब की कसम! जब तक यह लोग अपने सब इख़्तिलाफ़ात में आप ही का हुक्म कुबूल नहीं करेंगे तब तक इनको ईमान हासिल नहीं होगा और आपके फ़ैसले पर दिल में नाराज़ भी न हों बल्कि उसे खुशी से कुबूल करें और हर तरह से मान लें।"

(निसा–आयत–65)

(5) 'क़यामत' के दिन पर ईमान लाने का मतलब है इस बात पर पक्का यक़ीन रखना कि मरने के बाद रोज़े क़यामत (दुबारा) ज़िन्दा होना है और हिसाब किताब के लिए अल्लाह के सामने हाज़िरी देनी है उस दिन दो ही ठिकाने होंगे जन्नत या जहन्नम। मोमिनों के लिए जन्नत और काफ़िरों के लिए जहन्नम जैसा कि इर्शादे बारी है "काफ़िरों का ख़्याल है कि उन्हें दुबारा ज़िन्दा नहीं किया जाएगा। आप कह दीजिए कि अल्लाह की कसम। तुम्हें

ज़रूर दुबारा उठाया जाएगा। फिर जो कुछ तुम करते हो उसके बारे में तुम्हें बताया जाएगा और यह अल्लाह के लिए आसान है।"(तग़ाबुन–आयत–07)
(6) 'तकदीर' पर ईमान लाना यह है कि कायनात की हर चीज़ चाहे छोटी हो या बड़ी उसका इल्म अल्लाह के पास है। हर–हर बात लौहे 'महफ़ूज़' में लिखी हुई है और दुनिया में कोई काम अल्लाह के हुक्म के बग़ैर नहीं होता। जैसा कि इर्शादे बारी है "हमने हर चीज़ को एक खुली किताब (लौहे महफ़ूज़) में लिख रखा है।" (यासीन–आयत–12)

(2) कलमा तय्यिबा

" ला इलाहा इल्ललल्लाह मुहम्मदुर्ररसूलुल्लाह" याद कराके उसका मआनी 'अल्लाह के सिवाए कोई मअबूदे बरहक़ नहीं और मुहम्मद सल्लल लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं।

भी बताया जाए। यह भी सिखलाएं कि यह 'लाइलाहा इल्लल लाह' वह कलमा है जिसकी दअवत तमाम अम्बिया अलहिस्सलाम ने दी। इस कलमें में सारे झूटे मअबूदों का इन्कार है और सिर्फ़ अल्लाह के हकीकी मअबूद होने का इक़रार है।

इर्शादे बारी है "तुम सब का मअबूद एक ही है उसके सिवाए कोई मअबूदे बरहक़ नहीं"
(बक़राह–आयत–163)

'मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' का यह मतलब है कि मुहम्मद सल्ल. को अल्लाह का आख़िरी रसूल मानें। क्योंकि अल्लाह ने उन्हें कयामत तक आने वाले सारे लोगों के लिए रसूल बना कर भेजा है। उनके बाद कोई और नबी या रसूल आने वाला नहीं है। आपके बाद जो भी नबूवत या रिसालत का दावा करे वह झूटा है।

इस कलमे पर ईमान लाने का यह तकाज़ा है कि आप सल्ल. की इताअत की जाए। आप सल्ल. की सीरत को पढ़ कर या सुन कर उसे अपनी ज़िन्दगी में ढ़ाला जाए। आपने जिन कामों के करने का हुक्म दिया हैं, उन्हें किया जाए और जिनसे मना फ़रमाया है उनसे बचा व रूका जाए। आप सल्ल. ने क़यामत तक के बारे में जो कुछ बतलाया उसे सच मान कर उस पर यकीन किया जाए।

(3) झूट बोलने से बचें:– झूट बोलने से परहेज़ करे। औलाद के सामने झूट बिल्कुल न बोले ताकि वह भी झूट बोलने से बचे। सिर्फ़ सच बोलें और सच बोलना ही सिखलाएं। क्योंकि "झूट बोलना मुनाफ़िकों की एक निशानी है।"
(बुख़ारी–6095–मुस्लिम–211)

(4) खाने–पीने के आदाब सिखलाएं:– औलाद को सिखलाएं कि 'बिस्मिल्लाह' पढ़ कर दाएं हाथ से खांए–पीयें और आख़िर में अल्लाह का शुक्र अदा करें। "एक बच्चा जो रसूल सल्ल. के साथ खाने में शरीक था, से आप सल्ल. ने फ़रमाया "ऐ बच्चे! बिस्मिल्लाह पढो, दाएं हाथ से खाओ और अपने सामने से खाओ।"
(बुख़ारी–5376 – मुस्लिम–2022

(5) औलाद के साथ इन्साफ करें:– सब औलाद को बराबर समझे और उनके साथ इन्साफ़ करें। हर एक को एक जैसी चीजें ले कर दें। किसी को कम और किसी को ज़्यादा या किसी को सस्ती और किसी को मंहगी चीज न दें और न ही यह करें कि किसी को दें और किसी को न दें।

"बशीर रज़ि ने जब अपने सिर्फ़ एक बेटे नौमान रज़ि. को कुछ माल देना चाहा तो रसूल सल्ल. ने उनसे फ़रमाया "अल्लाह से डरो और अपनी औलाद में इन्साफ़ करो।"

(बुखारी–2587 – मुस्लिम –4181 – अबुदाऊद–3542 – इब्ने माजा–2375)

(6) गाली बकने और बेहुदा बात करने से रोकें:– इसलिए कि रसूल सल्ल. ने फरमाया "अपने मां–बाप को गाली देना बड़े गुनाहों में से है। जब वह किसी के मां–बाप को गाली देता है तो वह बदले में इसके मां–बाप को गाली देता है।" (गोया किसी के मां–बाप को गाली देना अपने मां–बाप को गाली देने जैसा है।) **(बुख़ारी – मुस्लिम–6591)**

(7) मां–बाप के साथ अच्छा सुलूक करना सिखलाएं:–बाप औलाद को मां की इज़्ज़त करने, कहा मानने, फ़रमाबरदारी करने और उसके साथ अच्छा बर्ताव करने की तलक़ीन करे और मां औलाद को बाप की फ़रमाबरदारी करने, एहतेराम करने और अच्छा सुलूक की सीख दे।

(8) सफ़ाई:–औलाद को अपना जिस्म, लिबास और घर साफ़ सुथरा रखने की तालीम दें। यह भी सिखलाएं कि खाने से पहले और खाने के बाद हाथों को धोएं।

(9) दीनी तालीम:– दुनियावी तालीम के साथ–साथ औलाद की दीनी तालीम पर भी ध्यान दें। क्योंकि दीनी तालीम पाकर ही वह दुनिया व आख़िरत में फ़ायदें मन्द साबित होगी। बच्चों को कुरआन पढ़ाएं और अगर वह इसे हिफ़्ज़ करलें तो यह बहुत बड़ी नैअमत है। क्योंकि क़यामत के दिन वाल्दैन को ऐसी ही औलाद की वजह से ताज पहनाया जाएगा। इसके अलावा रसूल सल्ल. की अहादीस, सीरते तय्यिबा और इस्लामी अक़ाइद की खास बातों का इल्म दें।

(10) पर्दा:– वाल्दैन को चाहिये कि वह अपनी लड़कियों को बचपन ही से पर्दा करने की तालीम दें। उसकी अहमियत व फायदे के बारे में बताएं। इर्शादे बारी तआला है। ऐ नबी (सल्ल.) अपनी बीवियो, बेटियों और तमाम मुसलमानों की औरतों से कह दो कि वोह अपने ऊपर अपनी चादरें लटका लिया करें। इससे उनकी पहचान हो जाया करेगी फिर इन्हें सताया नहीं जाएगा।"**(अहज़ाब–आयत–59)**

(11) औलाद को फ़हश फ़िल्में देखने और बेहुदा डायजेस्ट पढ़ने की बुराई व नुक्सानात बताएं और इन बुराईयों से उन्हें रोकें। क्योंकि इनसे अखलाक़ व किरदार में बिगाड़ पैदा होता है।

(12) औलाद को बुरी सोहबत से बचाएं। क्योंकि ज़्यादातर बच्चे बुरी सोहबत ही से बिगड़ते हैं।

(13) गाने सुनने से मना करें क्योंकि इससे दिल मुर्दा हो जाता है और अख़लाक़ व आदात में बुराई पैदा होती है।

(14) औलाद की इस्लाह के लिए अपनी कोशिश व मेहनत के अलावा अल्लाह से दुआ भी करें। खुसूसन वोह मां–बाप जिनकी औलाद बिगड़ चुकी हो उन्हें तो ज़्यादा दुआएं करना चाहियें। क्योंकि हिदायत देने वाला तो अल्लाह ही है। इसलिए भी कि "औलाद के हक़ में बाप की दुआ को अल्लाह ज़रूर कुबूल करता है।" **(सही अल जामेअ–3033)**

अल्लाह से दुआ है कि वोह हम सभी की औलाद को नेक व सालेह बनाए और उन्हें दुनिया व आख़िरत में हमारी आंखों की ठन्डक बनाए और हमें अपने दीन की सीधी राह पर चलाए।

आमीन!

आपका दीनी भाई
मुहम्मद सईद
9887239649, 9214836639